अनुबोधन, खण्ड 2, अंक 1, मार्च 2026, पृष्ठ 286–293
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट), 3108-1185 (ऑनलाइन)
https://doi.org/10.65885/anubodhan.v2n1.2026.027

संस्कृत वाङ्मय में नदियों का औषधीय महत्त्व

Sipra Pal*

प्राप्तिः 25 मार्च 2026 / स्वीकृतः 27 मार्च 2026 / प्रकाशितः 31 मार्च 2026
जर्नल वेबसाइटः https://anubodhan.org

सारांश

जिससे जगत- प्रपंच की सृष्टि हुई है, उन पंचमहाभूतों में प्रधान तत्त्व है जल, तथा उस जल का मुख्य स्रोत है नदियाँ। संस्कृत वाङ्मय में नदियों का स्थान सर्वोपरि है। वेदों में नदियों को यज्ञ अनुष्ठानों का आधार तथा आध्यात्मिक चेतना जागृत करनेवाली दिव्य शक्ति के रूप में विभूषित किया गया है। ऋग्वेद और अथर्ववेद में नदियों के जल को रोग और अमंगल नाशक औषधि माना गया है। ऋषियों ने सरस्वती, सिन्धु, सरयू आदि नदियों से शारीरिक और मानसिक बल तथा ऊर्जा की प्रार्थना की है। शांति और आरोग्य के लिए भी यज्ञभूमि में नदियों का आह्वान किया गया है। ऋग्वेद में सरस्वती की स्तुति सबसे पवित्र और श्रेष्ठ नदी के रूप में की गई है। सरस्वती नदी से यह प्रार्थना की गई है कि वे अपने पवित्र धारायों से हमारे अशुद्धियों और मानसिक विकारों को दूर करें। महाभारत में नदियों को महाफलदायिनी और जीवनदायिनी माता कहा गया है– "विश्वस्य मातरः सर्वाः सर्वाश्चैव महाफलाः" (महाभारत भीष्मपर्व ९, ३७)। पुराणों के अनुसार पवित्र गङ्गा, यमुना, सरयू, शिप्रा आदि नदियों में स्नान करने से शारीरिक शुद्धि और मानसिक शांति मिलती है। चरक, सुश्रुत, वाग्भट आदि आयुर्वेदाचार्यों ने गङ्गा, यमुना ,सिन्धु, सरयू आदि नदियों के जल को पथ्य और उत्तम गुणों से युक्त बताया है। इन आयुर्वेदाचार्यों के अनुसार नदियों के जल में उपस्थित प्राकृतिक गुणवत्ता शरीर को शुद्ध करता है और जीवन शक्ति को बढ़ाता है। प्रस्तुत शोधपत्र में संस्कृत वाङ्मय में नदियों का औषधियों महत्त्व का विवेचन किया गया है।

बीज शब्द : पथ्य, जीवनदायिनी, पवित्र, औषधि, नदियाँ, ऋग्वेद, अथर्ववेद

---

*Ph.D. Research Scholar, Department of Sanskrit, Sido Kanhu Murmu University, Dumka, Jharkhand
E-mail: siprapal7432@gmail.com

प्रस्तावना

नदियाँ सृष्टि के प्रारंभ से ही अपनी जलधारा से मानव और मानवेतर जीवन के प्रवाह को गति दे रही हैं। वैदिक ऋषियों के कंठ से कभी नदियों की यश-गाथा गूंजी थी, तो कभी उनके समक्ष जीवन की प्रार्थना। कालिदास-माघ आदि महाकवियों के काव्यकृतियों में नदियों का रसज्ञ और सुमधुर वर्णन सहृदय के हृदय की परितृप्ति विधानकारी काव्यानन्दरुप औषधि ।नदियों के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। संस्कृत वाङ्मय में नदियों को अत्यंत पवित्र, जीवनदायिनी तथा मोक्षप्रद माना गया है। अध्यात्म और संस्कृति के साथ साथ शरीर तथा स्वास्थ्य नदियों से जुड़ा हुआ है। नदियाँ मानवों को समृद्ध और स्वस्थ्य बनाती है[1]। नदियाँ मानवों की कल्याणकार्य में सदा तत्पर रहती है।

क्षेमं कृण्वाना जनयो न सिन्धवोस्ता अस्य।

वर्णं सूचयो भरिभ्रति।[2]

यास्क के अनुसार – ओषधयो ओषद् इति धयन्ति वा। तासाम् एषा भवति। ओषत्येना धयन्तीति वा। दोषं धयन्तीति वा।[3]

अर्थात जो शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति उत्पन्न करके दोष अर्थात रोगों से आरोग्य प्रदान करती है, उसे औषधि कहते है। भावप्रकाशनिघंटु के अनुसार –'वैद्यो व्याधिं हरेद्येन तदद्रव्यंप्रोक्तमौषधम्"।[4]

अर्थात जिस द्रव्य से व्याधि का निरामय होता है उसे औषधि कहते है। ऋग्वेद में यह उल्लेख मिलता है कि- कुछ औषधियाँ नदियों में हैं।[5] चरक ,सुश्रुत ,वागभट प्रमुख आयुर्वेदाचार्यों ने नदियों के जल की कोई रोग प्रतिरोधक क्षमताओं के बारे में बताया है। संस्कृत वाङ्मय में नदियों के औषधीय महत्त्व का विवेचन शोधपत्र का विषय है।

वैदिक वाङ्मय में नदियों का औषधीय महत्त्व

वेदों में जलचिकित्सा का एक विशेष महत्त्व रही है।

आपो याचामि भेषजम्।[6]

अर्थात जल में भेषज प्रार्थना करता हूँ।

इदमापः प्रवहत यत्किं च दुरितं मयि।

[1] ऋग्वेदसंहिता ७.४८.४

[2] ऋग्वेदसंहिता १० .२४ .७

[3] निरुक्त ९ .६ .२७

[4] भावप्रकाश: ५, १०१

[5] ऋग्वेदसंहिता ७. ४. ५

[6] ऋग्वेदसंहिता १०.०९.०५

यद्वाहभिदुद्रोह यद्वा शेप उतानृतम्।।[7] अर्थात जल ही शरीर में ‘दुरित ‘अर्थात दुषित पदार्थ को वाहर निकालता है एवं मिथ्याभाषण आदि मानसिक रोगों से आरोग्य प्रदान करता है। शीतल जल से पाचन समस्या, विषाक्त पदार्थ को बाहर निकालना, तनाव और थकान दूर करने में प्रभावी है। वर्तमान में हाइड्रोथेरेपी (जलचिकित्सा)प्रभावी चिकित्सा पद्धति के रूप में माना गया है।

जल का जो भेषजीय गुण बताया गया है वह नदियों का होने का संकेत मिलता है।किसी विषय पर गहन चिंतन तथा वौद्धिक क्षमता को बढ़ाने के लिए नदियों के संगम योग्य स्थान बताया गया है-

उपह्वरे गिरीणां संगथे च नदीना ।
धिया विप्र अजायत ।।[8]

उर्ध्वप्रदेश अथवा निम्नप्रदेश में प्रवहनशील नदियों के जल “शिपद”रोग के लिए औषधि है । सायणाचार्य के अनुसार -शिपद नाम रोगविशेषः।

ता अस्मभ्यं पयसा पिन्वमानाः शिवा देवीरशिपदा भवन्तु [9]।

ऋषियों ने नदियों के पास आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक -इन तीन प्रकार के दुखों की शांति के लिए प्रार्थना की है ।

शं नः सिन्धवः शमु सन्तापः।[10]

सिन्धु और असिक्नी नदी में औषधियाँ होने का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।

यत् सिन्धौ यदसिकन्यां यत् समुद्रेषु मरूतः सवर्हिषः ।
यत्पर्वतेषु भेषजम्।। [11]

जो नदियाँ हिमालय से निकालकर समुद्र में मिलती है उन नदियों का जल हृदरोग के लिए पथ्य बताया गया है।

हिमवतः प्रस्रवन्ति सिन्धौ समह संगमः।
आपो ह मह्यं तद् देवीर्ददन हृद्योत।। [12]

हिमालय में अनेक औषधीय पौधे और जड़ी-बूटियाँ जैसे अश्वगंधा, संजीवनी बूटी और जटामांसी पाए जाते है, जिनका उपयोग वात, पीत्त, कफ, त्वचा रोग और थकान जैसे बीमारियों के उपचार में किया जाता है। हिमालय से निकलने वाली गङ्गा, यमुना और सिन्धु जैसी नदियों में

---

[7] ऋग्वेदसंहिता १०.०९.०८

[8] ऋग्वेदसंहिता ८.६.२८

[9] ऋग्वेदसंहिता ०७.५०.०४

[10] ऋग्वेदसंहिता ७. ३५. ८

[11] ऋग्वेदसंहिता ०८.२०.२५

[12] अर्थववेदसंहिता ६.२४.१

जड़ी- बूटियों का रस, पोषक तत्त्व और हिमालय की चट्टानों व मिट्टी मौजूद खनिज और गंधक घुल जाते हैं, जिससे इन नदियों के जल औषधीय गुण आ जाते हैं। नदियों के तट पर औषधीय जड़ी बूटियाँ पाई जाती हैं, जिससे कोई रोगों का उपशम होता है। विषों का उपचार के लिए नदियों को औषधि युक्त स्थान बताया गया है । परूष्णी नदी के जल को ह्रदय के लिए सुखकर बताया गया है

मध्वा पृञ्चे नद्यः पर्वता गिरयो मधु।
मधु परुष्णी शीपाला शमास्ते अस्तु शंह्रदे ।। [13]

नदियों के जल को उत्तम वैद्य कहा गया है। आखों, जांघ और घुटनों में दर्द के लिए नदियों से औषधि कामना की गई है ।

यन्मे अक्ष्योरादिद्योत पार्ष्णोः प्रपदोश्च यत्।
आपस्तत् सर्वं निष्करन, भिषजां सुभिषक्तमा।।
सिन्धुपत्नीः सिन्धुराज्ञीः सर्वा या नद्य स्थन।
दत्त नस्तस्य भेषजं तेना वो भुनजामहे।। [14]

आर्षकाव्य में नदियों का औषधीय महत्त्व

आर्षकाव्य में नदियों का विशेष स्थान रहा है । श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण में गङ्गा, यमुना , सरस्वती ,गोदावरी ,मन्दाकिनी ,सरयू आदि नदियों को "शिवोदकाम्"[15]. " शिववारिवहाम्" ,[16] "शिवजलाम्"[17] 'दिव्याम्"[18] , 'प्रसन्नोदकाम्"[19] कहा गया है जिससे यह प्रतीत होता है कि नदियाँ पवित्र, निर्मल और रोगनाशक थीं। नदी के किनारे का मनोरम प्राकृतिक वातावरण मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है । मन्दाकिनी नदी के तट पर स्थित अनुपम सौन्दर्य युक्त चित्रकूट पर्वत का वर्णन करते हुए ऋषि कहते है कि- चित्रकूट पर्वत का निसर्गसुंदर परिदृश्य काय ,मन तथा वाक् को शान्ति देने वाला है ।[20] नदियों में स्नान करने से थकान और

---

13 अथर्ववेदसंहिता ६.१२.३

14 अथर्ववेदसंहिता ६.२४.२-३

15 वा.रा. २.८३.२२

16 वा.रा. २.५१.१०

17 वा.रा. २.११३.२१

18 वा.रा. ४.४१.१५

19 वही

20 वा.रा. २.९४.१८

तनाव दूर हो जाता है ।
न सोस्ति यः स्यान्न गतक्लमः सुखी।[21]

महाभारत में अनेक प्रसंग में नदियों में स्नान का उल्लेख रोगनिवारक ,शक्ति वृद्धि और शुद्धि के लिए किया गया है। गोकर्ण तीर्थ में स्थित ताम्रपर्णी नदी का जल शीतल ,पवित्र, रोगनाशक और हृदय के सुखकर बताया गया है।[22]

पुराणों में नदियों का औषधीय महत्व

पुराण एक ऐसा विश्वकोश है जहाँ नदियों का विशद विवरण मिलता है। पुराणों में नदियों का धार्मिक और आध्यात्मिक महत्त्व के साथ औषधीय महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है । ब्रह्मपुराण में यह वर्णन मिलता है कि नगर और जनपद के लोग नदियों के जल पीकर सदा प्रसन्नचित्त रहते थे।

ताःपिवन्ति सदा हृष्टा नदीर्जनपदास्तु ते।[23]

नदियों में स्नान न केवल पापों का नाश, होता है बल्कि शारीरिक और मानसिक रोग भी शांत होतें हैं। गङ्गा और यमुना नदी को सभी रोगों का नाशक बताया गया है।

सर्वविघ्नप्रशमनं सर्वरोगनिवारणम्। [24]

स्कंदपुराण के अनुसार गंगाजल में विष अर्थात हानिकारक बैक्टीरिया को नाश करने की क्षमता होती है ।गंगा केवल एक मोक्षदायिनी नदी ही नहीं बल्कि रोगों का नाश करने वाली एक जीवनदायिनी स्रोत माना गया है।

गङ्गे त्वं परमात्मा च शिवस्तुभ्यं नमः शिवे।
रोगस्थो रोगतो मुच्येद्विपद्भ्यश्च विपद्युतः।।[25]

गंगा को दाह ,त्वचा रोग और कुष्ठ आदि व्याधि को नाश करने वाली महौषधि कहा गया है।[26] पद्मपुराण मैं सरस्वती नदी के जल को अमृततुल्य बताया गया है । गरुड़पुराण में यह वर्णन मिलता है कि जो सूर्य किरणों से संयुक्त गंगा जल को पीता है वह सभी दोषों अर्थात रोगों से

---

21 वा.रा. २.९५.१८

22 महा .भा. ३.८८.१६

23 ब्र.पु. २०,१३

24 स्क.पु. ब्रह्मखण्ड २६,१-३

25 स्क.पु. काशीखण्ड २७.७५

26 स्क.पु. ब्रह्मखण्ड २७,२९

मुक्त हो जाता है[27]। शिप्रा नदी में स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थ है शंख तीर्थ । उनका जल से कुष्ठ व्याधि का उपशम होता है।[28] स्कंदपुराण में यह वर्णन मिलता है कि पर्वतीय क्षेत्र से निकालने कारण नदियों के जल औषधियाँ और वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। उनका सार नदियों के जल में प्रवाहित होकर उनका जल कोई रोगों के लिए लाभदायक होता है।

आयुर्वेद में नदियों का औषधीय महत्त्व

आयुर्वेद में नदियों को जीवनदायिनी, आरोग्यवर्धक एवं औषधीय गुणों से युक्त माना गया है। चरकसंहिता में हिमालय से निकालने वाली सिन्धु ,गङ्गा यमुना ,व्यास ,सतलुज आदि नदियों को पथ्य कहा गया है। हिमालय के पत्थरों से टकराने एवं शीघ्रगति से वहने के कारण उनका जल निर्मल और रोगनाशक होता है।

नद्यःपाषाणविच्छिन्न विक्षुब्धविहतोदकाः।
हिमवत्प्रभवाः पथ्याः पुण्या देवर्षिसेविताः।।[29]

वही नदियाँ जव उच्चप्रवाह को छोड़कर मैदानों की और बहती है तब यही जल कृमि, हृदरोग, कंठरोग और शिररोग का कारण बन जाता है।[30] नदियों पर विभिन्न वैज्ञानिक परीक्षण इस विषय को पुष्टि करता है। इंडियन जर्नल ऑफ एक्सपेरिमेंटल बायोलॉजी (CSIR, 2001) के अनुसार गंगाजल में पाए जाने वाले बेक्टीरियोफेज हानिकारक जीवाणुओं को नष्ट करते हैं । Central pollution control Board की रिपोर्ट के अनुसार, यमुना नदी में खनिज लवणों की संरचना मानव त्वचा के लिए लाभदायक है। Geological survey of India, 2016 की रिपोर्ट के अनुसार, सतलुज और सिंधु में सल्फर और सोडियम लवण संधिवात एवं त्वचा रोगों में लाभदायक होते हैं। सुश्रुतसंहिता में पश्चिम की और बहने वाली नर्मदा, तापी आदि नदियों के जल को हल्का होने के पथ्य कहा गया है।[31] शीघ्रता से बहने वाली नदियों का जल निर्मल और हल्का होने के कारण पाचन में सहायक होता है।[32] नदियों का जो विकिर अर्थात नदी के निकट वालुकामय भूमि खनन करके जो जल पाया जाता है वह जल स्वच्छ ,निर्दोष, पाचन में सहायक

---

27 ग.पु. प्रेतकल्प २७,९

28 स्क.पु. नागरखंड १०,२४

29 च.स. सूत्रस्थान २७.२०६

30 अष्टांगहृदय सु.स्था. ५.१०

31 सु.स. सूत्रस्थान ४५.२३

32 सु.स. सूत्रस्थान ४५.२५

और पित्तनाशक होता है।[33] हारीतसंहिता में गंगा,यमुना ,सरस्वती, शोण, सरयू, शची, वेणा, शरावती, नीला आदि नदियों के जल को वात, पीत और कफ का संतुलन रखनेवाला एवं थकान को दूर करने वाला बताया गया है । चर्मण्वती, वेत्रवती, क्षिप्रा, सिंधु आदि नदियों का जल त्रिदोषनाशक, थकान दूर करने वाला एवं वलवर्धक होता है। तापी, गौमती आदि पश्चिम की और वहने वाली नदियों का जल हृदरोग और कुष्ठ रोग का उपशम करने वाला बताया गया है।[34]

कालिदास, श्रीहर्ष, माघ आदि महाकवियों के रचना में नदियों का अनुपम नैसर्गिक वर्णन से यह प्रतीत होता है कि नदियाँ कितनी स्वच्छ, निर्मल और रोगनाशक थीं। नदीतटवर्ती क्षेत्र की स्वच्छ व शुद्ध वातावरण मानसिक स्वास्थ्य के लाभदायक होता है। रघुवंशम् महाकाव्य में सरयू नदी को प्रजायों के लिए सुख व समृद्धि का कारण बताया गया है। सरयू नदी को अपनी वारिधारा रूप पोषक तत्त्वों से परिवर्धन करने वाली धात्री मानी गई है।

यां सौकतोत्सङ्ग सुखोचितानां प्राज्यैःपयोभिः परिवर्धितानाम्।
सामान्यधात्रीमिव मानसं मे संभावयत्युत्तरकौसलानाम् ।।[35]

नदीतट की शीतल वायु सुरतव्यापार जनित ग्लानि हरण करने में निपुण है।[36] अमृततुल्य गङ्गा के जल पीने वाला आध्यात्मिक ,आदिदैविक और आधिभौतिक जन्य संताप से मुक्त होकर सदा ही आनंद प्राप्त करते है। इसीलिए शारीरिक और मानसिक पाप तथा रोग से मुक्ति देनेवाली गङ्गा को पण्डितराज जगन्नाथ ने परम औषधि कहा है।

नरानम्ब त्रातुं त्वमिह भेषजमसि।[37]

निष्कर्ष

आयुर्वेद में नदियों के औषधीय गुणों पर गहन शोधपरक विवेचना की गई है। नदियों के जल में मौजूद मेटाबोलाइट्स हैजा,खुजली जैसे रोगों के उपचार में सहायक होते हैं। नदियों के संगम स्थित तीर्थ स्थलों में स्नान करने से शरीर में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है । आर्ष ग्रंथों में नदियों को माता के रूप में पूजा जाता था। ऋषियों ने नदियों की स्वच्छता और पवित्रता का विशेष ध्यान रखते थे। नदियों का योगदान को ध्यान में रखते हुए आदिकवि वाल्मीकि नदी की सरक्षण की बात कही है– बलयुक्ता नदीरक्षा।[38]

धर्मसूत्रों में नदियों को प्रदूषित करना पाप माना गया है- न नद्यां मेहनं कुर्यान्न।[39] प्रदूषित होने

---

33 भा.प्र. वारिवर्ग ४५.४६

34 हा.स. प्रथमस्थान ७.५९-६०

35 रघु. १३. ६२

36 मेघ. पूर्वमेघ ३१

37 गङ्गालहरी १५

38 वा.रा. अयोध्या कांड ८४.७

39 वौधायन धर्मसूत्र ६.१२

से नदियाँ अपनी गुणवत्ता को खो देती हैं इसीलिए हमारी पूर्वजों ने नदियों को प्रदूषित करना पाप मानते थे। नदियों पर बांधों के निर्माण से नदी का प्राकृतिक प्रवाह रुकता है, जिससे जलीय पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित होता है। वशिष्ठ धर्मसूत्र के अनुसार, नदियाँ अपने प्रवाह से पवित्र और निर्मल होती हैं- नदी वेगेन शुध्यते।[40]

सहायक ग्रंथ सूची

खण्डेलवाल, एस .एन .(2014) . *स्कंदपुराण* . वाराणसी :चोखम्बा संस्कृत सीरिज अफिस ।

गौड़, पण्डित रामस्वरूपशर्मा .(2006) . *अथर्ववेदसंहिता* . वाराणसी :चौखम्बा विद्याभवन।

ठकरल, डॉ .केवलकृष्ण .(2019) . *सुश्रुतसंहिता* . वाराणसी :चौखम्बा ओरियन्टालिया ।

त्रिपाठी, ब्रह्मानन्द .(2016). *अष्टाङ्गहृदयम्* .वाराणसी : चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान।

त्रिवेदी, पण्डित रामगोविन्द .(2007) . *ऋग्वेदसंहिता* . वाराणसी :चौखम्बा विद्याभवन ।

पाण्डे, पण्डित रामतेज (2014) . *गरुड़पुराण* . वाराणसी :चौखम्बा विद्याभवन।

पानशीकर, लक्ष्मणशास्त्री (2009). *रामायणम्* .दिल्ली : लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ।

शर्मा, 'ऋषि' उमाशंकर (1998). *ऋग्वेदसंहिता* .वाराणसी : चौखम्बा विद्याभवन।

सातवलेकर, डॉ .पण्डित श्रीपाद दामोदर (1968) . *महाभारतम्*. पारडी : स्वाध्याय मण्डल।

सेनगुप्ता, श्रीनरेन्द्रनाथ और श्रीबलाइचन्द्र (1991) . *चरकसंहिता* . वाराणसी :चौखम्बा ओरियन्टालिया।

Copyright © 2026 Author(s). Published by Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).

---

[40] वशिष्ठ धर्मसूत्र ४.४८